

मित्रा बहुत खुशमिजाज और सबसे अच्छे से बात करने वाली लड़की थी। घर में वह और उसकी माँ अकेले रहते थे। मित्रा नौकरी करती थी और उसी से दोनों का गुजारा चलता था।

एक समय ऐसा आया कि घर की मरम्मत, हाउस टैक्स और कई खर्चे एक साथ आ गए। बड़ी मुश्किल से मित्रा ने सब कुछ संभाला।

कहते हैं ना, गरीबी में आटा गीला। उसी बीच मित्रा की माँ का फ़ोन हाथ से गिर गया। फ़ोन इतनी बुरी तरह टूट गया कि उसकी मरम्मत की कोई संभावना नहीं बची।

माँ के पास फ़ोन होना ज़रूरी था। कोई आपात स्थिति आ जाए तो संपर्क का साधन होना चाहिए। लेकिन मित्रा के पास नया मोबाइल खरीदने के लिए पैसे नहीं थे।

तभी उसके मन में विचार आया कि उसके सर के पास तीन फ़ोन हैं। यदि वह उनमें से एक फ़ोन ले ले तो उनका कुछ नहीं बिगड़ेगा और उसकी माँ के पास भी फ़ोन हो जाएगा। यही सोचकर मित्रा ने अपने सर का एक फ़ोन उठा लिया।

सर को इस बात की जानकारी नहीं थी। उन्होंने पुलिस में शिकायत दर्ज करवा दी। पुलिस ने फ़ोन को ट्रैकिंग पर डाल दिया।

मित्रा को लगा कि फ़ोन स्विच ऑफ़ रखने से किसी को कुछ पता नहीं चलेगा। लेकिन जब उसे मालूम हुआ कि पुलिस मामले में शामिल हो चुकी है, तो वह घबरा गई। एक महीने तक फ़ोन बंद रखने के बाद उसे लगा कि मामला शांत हो गया होगा, इसलिए उसने फ़ोन चालू कर दिया।

जैसे ही फ़ोन चालू हुआ, पुलिस सक्रिय हो गई और मित्रा को उसके घर से गिरफ्तार कर लिया गया।

सबके सामने अपनी बेटी की गिरफ्तारी का सदमा उसकी माँ सह नहीं पाई। जब मित्रा के सर को पूरी सच्चाई का पता चला, तो उन्होंने तुरंत केस वापस ले लिया और मित्रा को उसकी नौकरी भी लौटा दी।

लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। एक भूल ने मित्रा से उसकी माँ को छीन लिया। समाज में उसे अपमान सहना पड़ा और लोगों का भरोसा भी उस पर कम हो गया।

इस तरह मजबूरी में की गई मित्रा की एक छोटी-सी भूल उसके लिए इतनी बड़ी सज़ा बन गई कि वह शायद उसे कभी भूल न पाए।